माननीय कैलाश पति मिश्र जी के बारे मे संस्मरणात्मक आलेख

कैलाश जी के नाम से लोकप्रिय माननीय श्री कैलाश पति मिश्र एक पुण्यात्मा थे। पारदर्शी, निष्कपट, निष्पाप, बहुआयामी व्यक्तित्व और गंभीर पर सहज, सरल और आत्मीय स्वभाव उनकी विशेषता थी। वे एक ध्येय के प्रति समर्पित थे। संगठन के प्रति उनकी निष्ठा महाभारत के भीष्म पितामह और हस्तिनापुर के अंतर्संबंधो की भाँति अद्वितीय थी। मुझे उनके सान्निध्य में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने उन्हे जितना अधिक नज़दीक से देखा उतना ही बड़े मन का पाया। अनुशासन से समझौता उनकी कार्यप्रणाली के लिये सर्वथा अग्राह्य था। कार्यकर्ताओं की ग़लतियों को भूल जाने और सहकर्मी नेताओं की दुर्भावनापूर्ण कटु आलोचनाओं की अनदेखी कर रहने का उनका बड़प्पन अतुलनीय था।

वे संत प्रवृति के थे । बूँद आघात सहहिं गिरि कैसे, खल के वचन संत सहे जैसे । कैलाश जी की राजनीतिक जीवन यात्रा पर रामायण की यह चौपाई सटीक बैठती है । उनके समीप घटनेवाली दैनन्दिन घटनाक्रमों के संद । महात्वाकाँक्षी राजनीतिक सहकर्मियों एवं विरोधियों के कटाक्षों को गरल की तरह पीकर पचा लेने की अद्भुत क्षमता उनमें थी । उनके समीप घटने वाली दैनन्दिन घटनाक्रमों के संदर्भ में मैंने इसे महसूस किया है । संगठन सर्वोपरि, न किसी से दुराग्रह न किसी के प्रति असीमित लगाव उनके यात्रा पथ का मूल मंत्र था । उन्होंने जीवन पर्यंत इसका निर्वाह किया । विद्यार्थी जीवन से लेकर संगठन में उच्च अधिकारी, बाद में बिहार सरकार के मंत्री, सांसद और राज्यपाल पद का दायित्व निर्वाह तक के सफ़र मे निर्मोह और दायित्व बोध के प्रतीक थे वे । लोग कहते थे "कैलाश जी" ज़रा सा भी नहीं बदले । बदला बहुत कुछ पर बदले बिल्कुल नहीं ।

वे एक निस्पृह राजनेता थे । राजनीति का कर्मक्षेत्र उन्होंने स्वयं नहीं चुना था । वहाँ वे एक विराट विचार के प्रतिनिधि स्वरुप थे । इसका बख़ूबी निर्वाह उन्होंने किया । विचार परिवार की दृष्टि के अनुरूप राजनीतिक संरचना खड़ा करने में जुटे रहने का मूल मंत्र उनका पांडेय था । परिस्थितियाँ परिवर्तित होती रही, परिदृश्य बदलते रहे, कार्यशैली करवट लेती रही, राजनीतिक रंगमंच के कलाकार आते-जाते रहे पर कैलाश जी साक्षी भाव से स्थिर रहे, सम रहे, तटस्थ रहे, प्रतिबद्ध रहे, जागरुक रहे । एक यायावर का जीवन, एक कर्मयोगी का संकल्प, एक राजनेता का दृढ़ निश्चय के जीवंत प्रतीक थे वे । वर्तमान पीढ़ी इस पर भले सहज विश्वास नहीं करे, पर ऐसा था और हाल फ़िलहाल तक था । उनका अनुकरण आसान नहीं है । पर कोशिश तो की ही जा सकती है ।

वे एक यात्री थे ,राजनीति की रपटीली राह पर सधे क़दम रखने वाले । साध्य और साधन का विवेक, रास्ता और मंज़िल का भेद, करणीय और अकरणीय की समझ से संचालित होने वाले । एक योद्धा के पराक्रम और एक नायक की ख़ूबियों से भरपूर, चिर पुरातन - नित्य नूतन के आग्रही । सीमा और मर्यादा के अधीन अपनी राह के राही, लीक पर भी और लीक से हटकर भी । एक सोच समझी सार्वजनिक राह बचपन में पकड़ा, जीवंत पर्यंत उस पर डटे रहे, अडिग रहे । लीक- लीक गाड़ी चले, लीके चले कपूत, बिना लीक तीनों चले, शायर, शेर , सपूत । एक ऐसे ही सपूत थे कैलाश जी ।

Scanned with OKEN Scanner

उनकी असंख्य यादें हमारे साथ हैं । कुछ का उल्लेख प्रासंगिक हो सकता है । इनका एक संक्षिप्त विवरण रखने की कोशिश कर रहा हूँ । जे पी आंदोलन के समय आपातकाल के दिन थे । जनसंघ के प्राय: सभी नेता गिरफ़्तार थे । बिहार में भूमिगत आंदोलन की कमान कैलाश जी सम्हाल रहे थे । मेरे ज़िम्मे आंदोलन की भूमिगत पत्रिका लोकवाणी के सम्पादन और आंदोलन समर्थक दलों क् प्रदेश स्तर के नेताओं के साथ सम्पर्क और सूचनाओं के आदान प्रदान का काम था । समाजवादी नेता प्रणव चटर्जी उर्फ़ लट्टू बाबू के यहाँ से कर्पूरी ठाकुर जी और जार्ज फ़र्नांडीस साहब की भूमिगत गतिविधियों की जानकारी लेकर कैलाश जी को देने के लिये साईकिल से उनके गुप्त ठिकाना की ओर जा रहा था कि चरैयाटांड़ पुल, पटना के आगे कंकड़बाग़ चौराहा के पास तत्कालीन बाई पास रोड पर पैदल जा रहे श्री नीतीश कुमार, श्री बशिष्ठ नारायण सिंह आदि मिल गये ।

बातचीत के दौरान उन्होनें कैलाश जी के बारे में पूछा तो मेरे मुँह से निकल गया कि मिलना चाहते हैं तो चलिये मिलवा देता हूँ, पास में ही हैं । उन्हे लेकर मैं कैलाश जी के एक गुप्त ठिकाने पर आ गया । एक लकड़ी टाल के भीतर यह जगह दिन में परस्पर मिलने-जुलने के लिये रखी गयी थी । कैलाश जी उन्हे मेरे साथ वहाँ देखकर अवाक् रह गये । काफी देर तक उन्होंने उनके साथ बातचीत किया । उनके जाने के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि यह आपने क्या कर दिया । इस ठिकाना के बारे में हम दो-चार लोगों को ही जानकारी है । भेद खुलने पर हमारी तो जो होगी सो होगी ही लकड़ी टाल मालिक को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है । चलिये बिना समय गँवाये यहाँ से निकल चला जाय । तेज़ी से रेल लाईन किनारे भागते-भागते हम दोनों पूर्वी लोहाना पुर में ताई (उषा ताई पंचनदीकर) के घर पहुँच राहत की साँस ली । वह गुप्त ठिकाना छूट गया और ताई के घर से थोड़ी दूर स्व० नरेश प्रसाद शर्मा (जिनके सुपुत्र अनिल शर्मा सम्प्रति भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव हैं) के घर नया गुप्त ठिकाना बना ।

मुझे लगा कैलाश जी काफी नाराज़ होंगे पर उन्होने आगे ऐसी भूल न हो इसके लिये सावधानी के टिप दिये और कहा कि भूमिगत आंदोलन में ख़ुद पर भी भरोसा करना जोखिम भरा होता है । मैं जानता हूँ आप उन्हे विश्वसनीय दोस्त मानकर मुझसे मिलवाने ले आये । ऐसे मामले में पहले पूछ लेना चाहिये । हमें न केवल अपनी चिंता करनी होती है बल्कि उससे पहले अपने आश्रयदाताओं की ख़ैरियत को प्राथमिकता देनी होती है । यह मेरे लिये एक सबक़ था और कैलाश जी के बड़प्पन का उदाहरण भी । इस घटना से कैलाश जी के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ गयी ।

इसके बाद कई ऐसे मौक़े आये जब कैलाश जी की नाराज़गी सामने आई । पर कभी भी उनका स्नेह और कार्यकर्ता भाव कम नहीं हुआ । अपने मन के विरुद्ध हुये कार्यों और निर्णय को भी दलित के व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्वीकार कर लेना और बिना मनोमालिन्य के संगठन संचालन में सहयोग और प्रोत्साहन देना उनका स्वाभाविक

Scanned with OKEN Scanner

गुण था । नवम्बर २००० में जिस प्रकार झारखंड के मुख्य मंत्री के लिये श्री बाबूलाल मरांडी का चयन हुआ उससे वे काफी दुखी, क्षुब्ध और आक्रोश में थे । ख़ासकर मुझसे वे सर्वाधिक नाराज़ थे । उनकी ऐसी नाराज़गी मैंने पहले कभी नहीं था । उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि जो भी हुआ है, भाजपा की कार्य संस्कृति के विपरीत हुआ है ।

भाजपा में मुख्य मंत्री के चयन का यह तरीक़ा नहीं रहा है । इसका दूरगामी प्रभाव होगा । यद्यपि बाबूलाल जी को शिखर पर पहुँचाने में उनके स्नेह और समर्थन का अप्रतिम योगदान रहा था , फिर भी संगठन की मान्य परम्परायें, मर्यादायें, अनुशासन और कार्य संस्कृति के सामने व्यक्तिगत स्नेह और लगाव का उनके लिये कोई स्थान नहीं था । उनकी अटूट प्रतिबद्धता हस्तिनापुर की तरह पार्टी के साथ थी । मन के अनुरुप निर्णय नहीं होने के बावजूद जिस निश्छलता के साथ उन्होंने सरकार गठन में बढ़चढ़कर भूमिका निभाया और झारखंड बनने के ऐतिहासिक अवसर पर हमलोगों का मार्गदर्शन किया उससे लगा ही नहीं कि दो दिन पहले मुझे डाँटने फटकारने वाले वही कैलाश जी थे । गोविन्दाचार्य जी की टिप्पणी थी कि "बाबू ऐसा केवल और केवल कैलाश जी से ही संभव है । इतना बड़ मन और विशाल हृदय और कहीं मिलना मुश्किल है । बड़े से बड़ा नेता भी इस मायने में कैलाश जी से छोटा है ।"

एक और घटना का उल्लेख मैं करना चाहता हूँ । १९९७ के शुरुआत में एक दिन उन्होंने मुझे बुलाया और बड़ी गम्भीर होकर पूछा कि क्या आपने माननीय आडवाणी जी से नीतीश कुमार जी को बातचीत कराने की पहल किया है ? उस समय तक भाजपा और समता पार्टी के बीच संबंध नहीं बना था । मुझे सूझ नही रहाथा कि मैं क्या कहूँ ? मेरा असमंजस ताड़कर उन्होने फिर पूछा कि क्या गोविन्दाचार्य इस मुहिम में शामिल है ? मैंने कहा कि नहीं मेरी ऐसी कोई योजना ही नहीं है और न इसके बारे में गोविंद जी को ही कोई जानकारी है । मुझे लगा कि कैलाश जी शायद इसलिये नाराज़ हैं कि ऐसी पहल उन्हे जानकारी दिये बिना की जा रही है । मेरी चुप्पी और इंकार को दरकिनार करते हुये अगले क्षण कैलाश जी ने कहा कि मुझे आडवाणी जी के यहाँ दीनानाथ मिश्र (अब स्वर्गीय) मिले थे उन्होंने विस्तार पूर्वक इस बारे मे मुझे बताया है । मैं तो आपको यह बताने के लिये बात छेड़ा कि विषय प्रगति पर है, माननीय आडवाणी जी इसमें रुचि ले रहे हैं ।

बिहार के कुख्यात पशुपालन घोटाला को उजागर करने में उनका विशेष प्रोत्साहन मुझे मिला । मेरे द्वारा इस संबंध में तैयार किये गये ४४ सूत्री आरोप पत्र को जारी करने का मौक़ा उन्होंने ११ अक्टुबर १९९४ को मुझे दिया । पार्टी का प्रदेश नेतृत्व उस समय मेरे इस आरोप को मानने के लिये तैयार नहीं था कि वित्तीय नियमावली, ट्रेज़री कोड, बजट मैनूअल, सीएजी आडिट, विधान सभा की लोक लेखा समिति के रहते हुये सरकारी ख़ज़ाना से अवैध

Scanned with OKEN Scanner

निकासी संभव है । पर कैलाश जी ने हमेशा मुझे और गहराई में जाकर तर्कपूर्ण तथ्य ढूँढने के लिये प्रोत्साहित करते रहे । इस दरम्यान मेरी सुरक्षा प्रबंध के लिये वे हमेशा चिंता और जिज्ञासा ज़ाहिर करते रहे ।

२००६ मे मैंने कैलाश जी के सामने प्रस्ताव रखा था कि मैं उनकी जीवनी लिखना चाहता हूँ । मैंने अनुरोधँ किया कि १९६७ मे बिहार में संयुक्त विधायक दल (संविद) की सरकार बनने के बाद से आपकी गतिविधियाँ मेरे ज़ेहन में हैं । आप १९४५-४६ में संघ का पूर्णकालिक बनने से १९६६ तक की अपने बारे मे जानकारियाँ दे दें तो आपके जीवन संघर्ष पर एक आधिकारिक पुस्तक तैयार करने की मेरी अभिलाषा है । वे आज कल करते रहे, टालते रहे । इसके पीछे का मूल कारण था कि वे प्रसिद्ध परांगमुख थे । इसके पहले भी १९९७ में मैंने उनसे निवेदन किया था कि जितना समय और श्रम आप अपने भावों को कविता के रुप में अभिव्यक्त करने में लगाते हैं उसका चौथाई भी आज़ादी पूर्व से अबतक के अपने संस्मरण तैयार करने में दें तो वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिये समसामयिक राजनीतिक परिवेश का समृद्ध ख़ज़ाना उपलब्ध हो जायेगा । कुछ दिनों तक पटना भाजपा कार्यालय में सहायक शशिकांत झा को बुलाकर अपने अनुभवों को लिखाते रहे। पर बाद में फिर उनका मन कविता रचना में रम गया ।

मुझे हमेशा अफ़सोस रहेगा कि मैं उनके संस्मरण और जीवन चरित को मूर्त रुप देने के लिये उन्हें तैयार नहीं कर सका । मूल्यवान स्मृतियाँ उनके साथ चली गयीं । उन्होंने अवश्य इस बारे में कुछ न कुछ कही न कहीं लिख छोड़ा होगा । इन्हें समेटने और इनपर शोध करने की ज़रुरत है । किसी न किसी को यह बीड़ा उठाना होगा ।

- सरयू राय

Scanned with OKEN Scanner